19 महाकवि कालिदास



नरपत बारहठ 'हडवेचा'

राजस्थानी संस्कृति के शोधकर्ता नरपत बारहठ 'हडवेचा'ने एम.ए.बी.एड्. की उपाधि प्राप्त की है। जयनारायण विश्व विद्यालय, जोधपुर से वे संलग्न है। उनकी विशेष रूचि काज लेखन में हैं। वे संस्कृति के प्रवाहों और प्रवाहों को समझने में यत्नशील है। महापुरुषों को नमन करते हुए आपने लिखा हैं- जिन्होंने देशसेवा की खातिर अपना घर, परिवार छोड़कर एशो-आराम त्याग कर भूखे-प्यासे नंगे-पाँव रहकर देश को गुलामी की जंज़ीरों से मुक्त कराने के लिए सर्वस्व कुरबान किया वे वंदनीय हैं। 'महापुरुषों की जीवनियां' आपकी प्रसिद्धि कृति है। इस संग्रह में कुल 60 प्रसिद्ध महापुरुष को जीवनचरित्र अंकित है। प्रस्तुत जीवनी 'महाकवि कालिदास' में कालिदास के जन्म और परिचय का एवं उनकी प्रसिद्ध साहित्यिक रचनाओं का विवरण हैं।

इस कृति से यह संदेश मिलता है कि किसी बच्चे को बुद्धु(मूर्ख) मानना नहीं चाहिए, क्योंकि वह मौका मिलते ही हीरे की तरह चमक सकता है।

कालिदास को हम मात्र संस्कृत के महाकवि के रूप में जानते हैं। स्वयं महाकवि कालिदास ने अपने विषय में कुछ नहीं लिखा है। हर्षचरित के शुरू में कवि बाण ने कालिदास का उल्लेख किया है। इससे पता चलता है कि कालिदास बाण से पहले हुए है। एक स्थान पर स्वयं कालिदास ने अपने अभिभावक के रूप में ''विक्रम'' नाम का उल्लेख किया है। वह कौन-सा विक्रम हैं, इस बात का अभी पूरी तरह पता नहीं चल पाया है। फिर भी उन्हीं राजा विक्रमादित्य और राजा भोज का समकालीन मानकर कितनी ही कथाओं का नायक बनाया गया है। विभिन्न भाषाओं में पहेलियों और लोककथाओं में उनकी विद्वता, कविता और चमत्कारिक प्रसंगों का वर्णन मिलता है।

जन्म और परिचय :

कुछ विद्वानों ने कालिदास का जन्म 365 ई. तथा निधन 445 ई. माना है। महाकवि कालिदास के जन्म स्थान के बारे में ठीक ठीक पता नहीं चलता। कुछ विद्वानों ने उनका जन्मस्थान उज्जयिनी (वर्तमान उज्जैन) माना है, जो सही लगता है क्योंकि मेघदूत में स्वयं कवि ने उज्जयिनी को विशेष दर्शनीय कहा है और लंबा रास्ता पड़ने पर भी उधर से जाने के लिए बादल से अनुरोध किया है।

उज्जयिनी में उन दिनों राजा विक्रमादित्य का राज्य था। वहाँ की प्रजा सब प्रकार से सुखी थी। साहित्य और कला की उन्नति चरम सीमा पर पहुँची थी। राजा विक्रमादित्य ने अपने नाम से ही विक्रम संवत् चलाया था। समय-समय पर उन्होंने सोने के जो सिक्के चलवाये थे, उनसे उनके राज्यकाल का ठीक-ठीक पता चलता हैं। विक्रमादित्य के शासनकाल में जितना वैभव देश में था, जितनी साहित्य तथा कला की उन्नति हुई, उतनी कभी नहीं हुई। एक से बढ़कर एक कवि, साहित्यकार और वैज्ञानिक इस युग में उत्पन्न हुए। राजा विक्रमादित्य स्वयं साहित्य और संगीत के अच्छे जानकार थे। संस्कृत भाषा की उन्नति भी इस काल में ही अधिक हुई।

अपने पूर्व जीवन में बुद्धु माने जानेवाले कालिदास विक्रमादित्य के दरबारी कवियों में सर्वश्रेष्ठ थे। कालिदास के अतिरिक्त आठ और कवि भी दरबार में थे जो नवरत्न कहलाते थे।

कालिदास के विषय में कहा जाता है कि वे युवावस्था तक निरक्षर थे। जिस डाल पर बैठते उसे ही काटते थे। निरक्षर होने पर भी वह इतने विद्वान और महाकवि किस तरह बन गये इसकी भी एक बड़ी विचित्र और रोचक कहानी है।

उन दिनों शारदानंद नाम के एक राजा थे। उनकी एक गुणवती और विद्वान पुत्री थी, जिसका नाम विद्योत्तमा था। वह बहुत सुंदर और रूपवती भी थी। उसके रूप, गुण और ज्ञान की प्रशंसा दूर-दूर के देशों तक फैली हुई थी। विद्योत्तमा को अपने रूप, गुण और ज्ञान का बड़ा घमंड था। अपने विवाह के सम्बन्ध में उसने एक घोषणा कर रखी थी कि जो उसे शास्त्रार्थ में हरा देगा उसी के साथ वह अपना विवाह करेगी।

उसकी इस घोषणा की जानकारी जैसे-जैसे पास पड़ोस के देशों तक पहुँचती गयी, वहाँ-वहाँ के विद्वान

तथा पंडित विद्योत्तमा से शास्त्रार्थ करने के लिए आने लगे, लेकिन विद्वान या पंडितों को बड़ी ग्लानि का अनुभव हो रहा था, और वे इसका बदला लेने का उपाय सोचने लगे थे। विद्वानों और पंडितों ने मिलकर तय किया कि विद्योत्तमा का विवाह किसी मूर्ख से करवा दिया जाय तो इसका घमंड टूट जाएगा और वे अपने अपमान का बदला भी ले सकेंगे। अत: अब वे ऐसे एक मूर्ख की तलाश में रहने लगे। संयोग से उन्हें एक दिन एक ऐसा ही मूर्ख युवक मिल गया। वह पेड़ की जिस डाल पर बैठा था उसे ही काट रहा था। पंडितों तथा विद्वानों को लगा कि उससे बड़ा मूर्ख और कौन होगा? इसलिए पंडितों ने उसे पेड़ से नीचे उतारा ओर समझा बुझाकर एक सुंदर राजकुमारी से उसका विवाह करा देने की बात कहकर तथा लालच देकर अपने साथ चलने को राजी किया। पंडितों ने उस मूर्ख युवक को यह बात अच्छी तरह समझा दी कि वह वहाँ कुछ नहीं बोलेगा और गूंगा बना रहेगा, नहीं तो उसका विवाह नहीं होगा। वह मूर्ख युवक बड़ा खुश हुआ। उसने पंडितों की बात मान ली ओर उनके द्वारा दिये गये अच्छे-अच्छे कपड़े पहन लिये। पंडित उसे विद्योत्तमा के पास शास्त्रार्थ के लिए ले गये।

राजकुमारी विद्योत्तमा को उस मूर्ख युवक का परिचय देते हुए पंडितों ने बताया कि ये हमारे गुरु है और बहुत बड़े विद्वान है, शास्त्रों के जानकार है। आपके साथ शास्त्रार्थ करने यहाँ आये हैं, लेकिन उन दिनों मौन व्रत चलने के कारण ये संकेत से ही शास्त्रार्थ करेंगे।

विद्योत्तमा पंडितों की यह छल भरी बात नहीं समझ सकी और शास्त्रार्थ के लिए तैयार हो गयी। उसने युवक को एक उँगली दिखायी जिसका भाव था कि ईश्वर एक है।

उस मूर्ख युवक ने समझा कि यह मेरी एक आँख फोड़ डालना चाहती है। उसने दो उँगलियाँ दिखाते हुए उसकी दोनों आँखें फोड़ डालने का संकेत किया। पंडितों ने इस संकेत का अर्थ विद्योत्तमा को समझाते हुए कहा- ''आपके प्रश्न के उत्तर में हमारे गुरुजी का कहना है कि ईश्वर और जीव दो है।''

इस बार राजकुमारी विद्योत्तमा ने पाँच उँगलियाँ दिखाकर पाँचों तत्त्वों का संकेत किया। उस मूर्ख ने समझा कि वह मेरे मुँह पर तमाचा मारने का संकेत कर रही है। उसने मुट्ठी बाँधकर तमाचे का जवाब घूँसे से देने का संकेत किया। पंडितों ने इस बार भी विद्योत्तमा को इस संकेत का अर्थ बताते हुए कहा- ''आपने पाँच उँगलियों से पाँच तत्त्वों का संकेत किया था, लेकिन हमारे गुरुजी का कहना है कि पाँचों तत्त्वों के मिलने से ही सृष्टि का निर्माण होता है, अलग-अलग रहने में नहीं।

इस तरह उपरोक्त शास्त्रार्थ में विद्योत्तमा ने उस मूर्ख युवक से अपनी हार मान ली और दोनों का विवाह धूम-धाम से पंडितों ने करवा दिया। एक दिन की बात है, एक ऊँट की बोली सुनकर वह मूर्ख युवक अपना मौन व्रत भूलकर यकायक बोल बैठा- उट्र... उट्र...।

उसको बोलते सुनकर विद्योत्तमा चौंक उठी। उसे पता चला कि उसका पति कोई विद्वान पंडित नहीं बल्कि एक बहुत बड़ा मूर्ख हैं। पंडितों की छल भरी बातों का अर्थ अब उसकी समझ में आ गया। विद्योत्तमा को बहुत मानसिक दु:ख पहुँचा और उसने अपने महल में कालिदास के प्रवेश पर रोक लगा दी और द्वारबंध कर लिये। कठोर उपासना से उसे माँ काली का वरदान प्राप्त हुआ और उसे काली का दास होने के कारण कालिदास नाम प्राप्त हुआ। शीघ्र की कालिदास सारी विधाओं को सीखकर प्रवीण हो गये। राजनीति, धर्मशास्त्र ओर साहित्य का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर वह फिर से विद्योत्तमा के पास लौटे। द्वार तब भी बंद था। कवि ने अपने विद्वान होने के प्रमाणस्वरूप संस्कृत में द्वार खोलने के लिए विद्योत्तमा से प्रार्थना की, 'अनावृत्त कपाट द्वार देहि।'

अंदर से पत्नी विद्योत्तमा ने पूछा, 'अस्ति कश्चिद् वाग्विशेष:।'

इस पर महाकवि कालिदास ने क्रमश- 'कुमारसम्भव', 'मेघदूत' और 'रघुवंश' की रचना विद्योत्तमा को सुनायी। विद्योत्तमा को जब उनके पंडित होने का विश्वास हो गया तो उसने द्वार खोलकर महाकवि का स्वागत किया।

कालिदास को हर क्षेत्र का गहरा अनुभव था। प्रकृति का जैसा वर्णन उनके साहित्य में मिलता है वैसा कहीं नहीं मिलता। उन्हें प्रकृति के बिना मनुष्यजीवन अधूरा दिखायी पड़ता था। कालिदास की उपमाएँ विश्व विख्यात हैं। उनकी कोई तुलना नहीं। उसका कोई जोड़ नहीं। चरित्रचित्रण में भी महाकवि कालिदास की तुलना नहीं की जा सकती! उनकी कोई बराबरी नहीं कर सकता। उसके पात्रों का व्यक्तित्व अपनापन लिए रहता है। हर बात बड़ी ही स्वाभाविकता से उपस्थित होती है। कालिदास अपने काव्य तथा नाटक के द्वारा बार-बार यही बताना चाहते हैं कि राजा प्रजा का शासक ही नहीं उसका रक्षक और पिता भी है। उन दिनों समाज में नारी का क्या स्थान था इस बात का पता भी हमें कवि कालिदास की रचनाओं में मिलता है। समाज में नारी को सम्मान और श्रद्धा की दृष्टि से देखा जाता था और उसे नृत्य, संगीत चित्रकला आदि की शिक्षा दी जाती थी।

महाकवि कालिदास के सात प्रमुख ग्रंथ हैं। उनमें से पहला ग्रंथ है 'ऋतुसंहार'। यह एक उत्तम काव्य है। इसमें कालिदास ने अपनी सूक्ष्म दृष्टि का परिचय दिया है। ऋतुओं का तथा प्रकृति का जितना सुंदर चित्रण काव्य में है, उतना कालिदास के अन्य ग्रंथों में नहीं है।

'मालविकाग्निमित्र' कालिदास का दूसरा ग्रंथ और पहला नाटक है। उसमें पाँच अंक और विदिशा के राजा अग्निमित्र तथा विदर्भ की राजकुमारी मालविका की प्रेमकथा है। तीसरा ग्रंथ 'विक्रमोर्वशीयम्' कालिदास का दूसरा नाटक है, इसमें पाँच अंक हैं तथा महाराज पुरुरवा और उर्वशी की प्रेमकथा का चित्रण किया गया है। 'कुमारसम्भव' का काव्य है और इसमें शिवपार्वती के विवाह से लेकर कुमार कार्तिकेय के जन्म और उसके द्वारा तारकासुर के वध तक की कथा का वर्णन है। 'मेघदूत' कालिदास का पाँचवा ग्रंथ है। यह भी एक खंडकाव्य है और इसके शुरु में कालिदास ने बादल को दूत बनाकर कुबेर की नगरी अलकापुरी तक का मार्ग बताया है। इसके उत्तरार्ध में यक्ष ने अपनी विरहिणी प्रिया को पहचानने के उपाय मेघ को बताये हैं और अपना संदेश दिया है। इस काव्य में वर्षाकाल ओर विरह का वर्णन खूब निखरा है। इसमें भारत के भूगोल की भी अच्छी जानकारी दी गयी है।

'रघुवंश' एक महाकाव्य है। कवि कालिदास ने रघुवंश की कथा कहने से पहले ही कह दिया है कहाँ तो सूर्य से उत्पन्न हुआ यह वंश, कहाँ मोटी बुद्धिवाला। मैं तिनकों से बनी छोटी-सी नाव लेकर अपार समुद्रि को पार करने की बात सोच रहा हूँ। सूर्यवंश के दिलीप से लेकर कुश और उनके अनेक उत्तराधिकारियों तक की कथा रघुवंश में है।

महाकवि कालिदास का सातवाँ ओर सर्वोत्कृष्ट ग्रंथ है 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्'। यह उनका तीसरा नाटक है और इसमें सात अंक है। महाकवि ने इस नाटक में राजा दुष्यन्त तथा शकुन्तला की कथा कही है। इस तरह महाकवि कालिदास आज भी हमारे संस्कृत साहित्य में अमर है। उनकी रचनाओं में तत्कालीन साहित्य, शासन और राजनीति, समाज और जनविश्वास, भूगोल, ललितकला, स्थापत्य आदि सभी की झलक मिलती है।

शब्दार्थ और टिप्पणी

अभिभावक बच्चों के पारिवारिक रक्षक **शास्त्रार्थ** शास्त्र संबंधी चर्चा **अनुरोध** आदेश **ग्लानि** दु:ख, पीड़ा **संकेत** इशारा **यकायक** सहसा **निरक्षर** अनपढ़ **रोचक** आकर्षक

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1) कालिदास के जन्मस्थान का नाम बताइये।

(2) मेघदूत का नायक कौन है?

(3) 'विक्रम संवत' का प्रारंभ किसने करवाया था?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के तीन-चार वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) कालिदास की अज्ञता किस बात से प्रकट होती है?

(2) विद्योत्तमा का परिचय दीजिए।

(3) महाकवि कालिदास की कृतियों के नाम दीजिए।

3. निम्नलिखित शब्दसमूह के लिए एक-एक शब्द लिखिए :

(1) जिसमें सभी का हित समाया हुआ हो

(2) विद्वानों द्वारा की जानेवाली शास्त्रों की चर्चा

(3) विद्या में जो उत्तम हो

4. निम्नलिखित विधानों के रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(1) विद्योत्तमा के एक उँगली दिखाने में ..... भाव था।

(2) सृष्टि का निर्माण ..... तत्त्वों के मेल से होता है।

(3) ऊँट की बोली सूनकर मूर्ख युवक ..... बोल उठा।

योग्यता-विस्तार

- अपनी कक्षा से प्रत्येक छात्रा की अच्छाई बताने का अवसर सभी को दीजिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- 'महाकवि कालिदास' की काव्यकला विषयक विद्वानों की प्रशस्ति – उपमा कालिदासस्य.... के बारे में जानकारी दें।
- 'कोई नीरा बुद्धु' जन्म भरके लिए नहीं होता, कठिन तपश्चर्या और मेहनत से महान बनता है, महा-कवि कालिदास के जीवन से प्राप्त संदेश बोध के रूप में दें।
- 'महाकवि कालिदास का संस्कृत साहित्य में योगदान' विषयक चर्चा-संगोष्ठि का आयोजन करें।

●